अपने-अपने अंतर्द्वंद्व

-प्रज्ञा प्रसाद

अपने-अपने अंतर्द्वंद्व

प्रज्ञा प्रसाद

शताक्षी प्रकाशन

रायपुर

अपने-अपने अंतर्द्वंद्व

प्रकाशक

शताक्षी प्रकाशन

8, मार्केटिंग सेंटर, चौबे कॉलोनी, रायपुर (छग)

ईमेल-booksshatakshi@ymail.com

दिल्ली कार्यालय:

213, वरदान हाउस, 7/28, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली

मुद्रकः

विशाल कौशिक प्रिन्टर्स

दिल्ली

ISBN: 978-81-89545-89-5

© लेखक

संस्करणः 2015

मूल्यः रुपए 150

बेटी सिद्धि को समर्पित

मन की बात

अपने-अपने अंतर्द्वंद्व आधारित है रिश्तों पर... नातों पर। खासकर उन रिश्तों पर जो हमें विरासत में नहीं मिलते, लेकिन जिनका अस्तित्व हम पर इतना हावी हो जाता है, जो हमारी जिंदगी की दिशा ही बदलकर रख देता है। उसमें सुख भी मिल सकता है और दुख भी। वो शक्ति भी बन सकता है और कमजोरी भी। इसमें मैंने कोशिश की है रिश्तों की जटिलता के कारणों को समझने की, ताकि उनका कुछ हद तक तो निदान किया ही जा सके। ताकि अपनी जिंदगी को हम ज्यादा सार्थक बना सकें, दूसरों को खुशी दे सकें और खुश रह भी सकें। क्योंकि जब तक कारण नहीं पता होगा। जब तक हम अपनी छोटी-छोटी कमजोरियों और स्वार्थों को एक हद तक दूर नहीं कर पाएंगे, तब तक सुखी जीवन नहीं जी पाएंगे। एक बात और कि ये मेरे निजी विचार हैं और हर व्यक्ति पर लागू नहीं होते। अपवाद हर जगह हैं। मैंने वही लिखा है जो बहुतायत में होता है। और हां मानव और उसका जीवन ग्रे होता है, ब्लैक या व्हाइट नहीं होता। इसलिए शायद आपको मेरे लेखन में कई जगह विरोधाभास मिले।

-प्रज्ञा प्रसाद

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला: क्रिया:।

जिस कुल में नारियों कि पूजा, अर्थात सत्कार होता हैं, उस कुल में दिव्यगुण, दिव्य भोग और उत्तम संतान होते हैं और जिस कुल में स्त्रियों कि पूजा नहीं होती, वहां जानो उनकी सब क्रिया निष्फल है।
-अथर्ववेद

हे नारी! तू स्वयं को पहचान। तू शेरनी हैं, तू शत्रु रूप मृगों का मर्दन करने वाली हैं, देवजनों के हितार्थ अपने अन्दर सामर्थ्य उत्पन्न कर। हे नारी! तू अविद्या आदि दोषों पर शेरनी की तरह टूटने वाली हैं, तू दिव्य गुणों के प्रचारार्थ स्वयं को शुद्ध कर। हे नारी! तू दुष्कर्म एवं दुर्व्यसनों को शेरनी के समान विश्वंस्त करने वाली हैं, धार्मिक जनों के हितार्थ स्वयं को दिव्य गुणों से अलंकृत कर।
-यजुर्वेद

नारी को अबला कहना उसकी निंदा करना है; यह पुरुष का नारी के प्रति अन्याय है। यदि शक्ति का अर्थ पाशविक शक्ति है तो सचमुच पुरुष की तुलना में स्त्री में पाशविकता कम है। और यदि शक्ति का अर्थ नैतिक शक्ति है तो स्त्री निश्चित रूप से पुरुष की अपेक्षा कहीं अधिक श्रेष्ठ है। क्या उसमें पुरुष की अपेक्षा अधिक अंतःप्रज्ञा, अधिक आत्मत्याग, अधिक सहिष्णुता और अधिक साहस नहीं है ? उसके बिना पुरुष का कोई अस्तित्व नहीं है। यदि अहिंसा मानव जाति का नियम है तो भविष्य नारी जाति के हाथ में है। हृदय को आकर्षित करने का गुण स्त्री से ज्यादा और किसमें हो सकता है?
-महात्मा गांधी

अनुक्रम

क्रम		पृष्ठ
1.	महंगाई के फायदे	08
2.	ये पति महोदय	10
3.	हैप्पी वेलेंटाइन्स डे	12
4.	बेटी के नाम मां का पत्र	14
5.	पति-पत्नी- मायने क्या?	17
6.	बेटे का मोह क्यों?	23
7.	कायराना कदम खुदकुशी	31
8.	ससुराल से भागती लड़कियां	35
9.	बहू बन जाएगी बेटी	39
10.	सास-बहू का रिश्ता- इतनी जटिलता क्यों?	42
11.	प्रेम विवाह और चुनौतियां	46
12.	लिव इन रिलेशनशिप	49
13.	बच्चा और नौकरी	51
14.	दहेज का दानव	53
15.	नारी की दुर्दशा- किसकी कितनी भूमिका?	55
16.	विवाहेतर संबंध- एक मृग मरीचिका	59
17.	कहां जाएं लड़की के माता पिता	61
18.	कानून में संशोधन की ज़रूरत	63
19.	समलैंगिकताः मानसिकता वही	65
20.	बलात्कार के बाद क्या?	66
21.	बच्चे होते हैं अनमोल	69

<u>महंगाई के फायदे</u> (व्यंग)

अब तक जहां भी देखा, पढ़ा और सुना। हर जगह महंगाई के नुकसान ही गिनाए गए। कितनी भाषणबाज़ी, बंद और सियासत भी हो गई इस पर। लेकिन जिस तरह से हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। इसके भी हैं। इसलिए आज मैं फोकस करुंगी इससे होने वाले फायदे पर। जिनपर संभवतः अब तक किसी का ध्यान नहीं गया है।महंगाई बढ़ने का सबसे बड़ा फ़ायदा तो ये है कि लड़कियों और महिलाओं को बांधकर रखने वाला समाज अब थोड़ा उदार हो गया है। पुरुष भी जो पहले अपने अहम के मारे होते थे। अब इसे साइड में रखकर चल रहे हैं। पहले पुरुष सोचता था। जब मैं कमा ही रहा हूं तो घर की औरत को कमाने के लिए बाहर निकलने की ज़रूरत ही क्या है। मैं क्या नामर्द हूं जो औरत की कमाई खाउंगा। औरत तो घर के कामकाज के लिए बनी है। लेकिन भला हो इस महंगाई का जिसने पुरुष को धरातल पर लाकर खड़ा कर दिया है। अब उसे पता चल गया है कि अगर घर ठीक से चलाना है। सुख-सुविधा के साथ रहना है। बच्चों की अच्छी परवरिश करनी है तो दोनों को समान रूप से घर और बाहर हाथ बंटाना होगा। महंगाई ने स्त्री को खुद ही समानता का अधिकार दे दिया। जिस बात को पुरुषों को बरसों से समझाया जा रहा था कि स्त्री-पुरुष एक-दूसरे के पूरक हैं और उन्हें हर काम मिलकर करना चाहिए। वो महंगाई के कारण खुद ब खुद उनकी समझ में आ गई। अब तो बाकायदा लड़के कामकाजी लड़कियों की डिमांड कर रहे हैं।अब जब कामकाजी लड़कियों की डिमांड होगी तो दहेज तो अपने आप ही कम हो जाएगा। क्योंकि लड़के के परिवारवोलों को लगता है कि ये तो सोने के अंडे देने वाली मुर्गी है। हर महीने तनख्वाह लाएगी। अब बताइए। महंगाई किस तरह से दहेज के खिलाफ भी अपना योगदान दे रही है। ऊपर से कमाने के कारण लड़की को समाज-परिवार में मान-सम्मान अलग। बोनस में। लड़की आत्मनिर्भर हुई वो अलग। और पति की सही मायनों में सहचरी भी हुई। और अब के लड़कों को भी अपनी पत्नी की प्रगति से खासी खुशी मिलती है। पैसों के लालच में नहीं बल्कि जेन्यूनली। उनकी मानसिकता

भी बदल रही है। और वे चाहते हैं कि उनकी पत्नी भी किसी भी मायनों में उनसे कम न हो। महंगाई के कारण बेटा-बेटी में भेद करने वाले माता-पिता भी आजकल लड़कियों की पढ़ाई के बारे में गंभीरता से सोच रहे हैं। और युवा से लेकर पैरेंट्स तक का रुझान करियर ओरिएंटेड कोर्सेस में पढ़ रहा है। जबकि पहले आर्ट्स सब्जेक्ट ही लड़कियों को थमा दिया जाता था। या बहुत से बहुत किसी तरह बीए करवाकर मां-बाप अपने कर्तव्यों की इतिश्री समझ लेते थे। या सिलाई-कढ़ाई जैसी चीजें सिखाकर ससुराल भेज देते थे।अब भआरतीय अर्थव्यवस्था में स्त्री-पुरुष बराबर का योगदान कर रहे हैं। और हमारी अर्थव्यवस्था और हमारा देश सही मायनों में महाशक्ति बनकर उभर रहा है।लड़कियों के आत्मनिर्भर होने के कारण अब परिवार भी ज्यादा संपन्न हो रहा है। इससे ये भी फ़ायदा हो रहा है कि वे अपना मनपसंद जीवनसाथी भी चुन रही हैं। और समाज उनकी पसंद पर मुहर भी लगा रहा है। वे यूं ही अत्याचार नहीं सह रहीं। बल्कि उनमें अब परिस्थितियों से लड़ने का साहस भी आ गया है। और आपने गौर किया होगा कि महंगाई बढ़ रही है लेकिन उसके साथ ही परचेज़िंग पावर में भी गज़ब का इज़ाफ़ा हुआ है। तो जब महंगाई के इतने फ़ायदे हैं तो भला हो इस महंगाई का।

ये पति महोदय (व्यंग)

बात पतियों की.. पति-पत्नी का रिश्ता ऐसा रिश्ता है। जिस पर सबसे ज़्यादा व्यंग्य लिखे और पढ़े गए हैं। आज मेरा भी मन हुआ कि मैं भी इस विषय पर हाथ साफ़ ही कर लूं। एक कहावत है- अपना बच्चा और दूसरे की बीवी सबको अच्छी लगती है। अक्सर पति अपनी पत्नी से मज़ाक करते हुए दूसरी लड़की या महिला की तारीफ़ ख़ासकर उनकी खूबसूरती की तारीफ़ ज़रूर करते हैं। खूबसूरती इसलिए क्योंकि खूबसूरत दिखना एक स्त्री की नैसर्गिक इच्छा होती है। कभी हसबेंड ऐश्वर्या की खूबसूरती पर आंहें भरता नज़र आएगा। तो कभी प्रियंका चोपड़ा की सेक्सी अदाएं उसे लुभाएंगी। तो कभी करीना का ज़ीरो फिगर देखकर उसे अपना दिल सीने से फ़िसलता महसूस होगा। लेकिन अगर बीवी यही अदाएं सार्वजनिक रूप से दिखाने लगे तो बताएं पति महोदय आप लोगों का क्या होगा। और घर-परिवार और बच्चों की ज़िमम्दारियों तले दबी बीवी ये सब करे भी तो कैसे। अगर बीवी सजने-संवरने में आधे से ज़्यादा वक्त लगा दे या पार्लर में ५ घंटे बैठ जाए। और बच्चों को परिवार को खाना न मिले तो पति महोदय सबसे पहले शिकायत आप ही करेंगे। कि बनने-ठनने से ज़्यादा ज़रूरी है कि घर की देखभाल करें। एक मिनट में ही पत्नी को उसकी ज़िम्मेदारियों पर लंबा-चौड़ा भाषण पिला डालेंगे।. हां अगर आप पति अपनी-अपनी पत्नियों को वैसे ही कपड़े, महंगे प्रॉडक्ट वाले मेकअप, ब्यूटी पार्लर में 1 दिन में खर्च करने के लिए 20-25 हज़ार रुपए आदि-आदि लाकर दें और तब आपकी पत्नी किसी हीरोइन को मात न कर दें तब आप मुझे बताइएगा। अब आप ही देखिए शिल्पा शेट्टी ने अरबपति राज कुंद्रा से शादी की। उनकी वेडिंग ड्रेस एकडिज़ाइनर ने तैयार किया। वो भी लाखों रुपए में। करोड़ों के जगमगाते हीरे पहनें.. तो अब परी जैसी तो लगेंगी ही न। अब ३५ रुपए का फ़ेयर एंड लवली देकर आप कल्पना करें कि आपकी बीवी करीना कपूर लगने लगे तो भला कैसे होगा। जहां भारतीय पत्नियों को रात में ये सोचकर सोना पड़ता है कि सुबह उठकर पति को ऑफ़िस भेजना है, बच्चों को तैयार करना है। सास-ससुर को नाश्ता-

खाना और दवाई देनी है। दोपहर में बच्चे आ जाएंगे स्कूल से तब फिर उन्हें खाना देना है। देवर-ननदों का ख़्याल छोटे भाई-बहनों जैसा रखना है।शाम का नाश्ता और फिर रात को खाना बनाकर सबको खिलाकर, बर्तन धोकर सोना है।. जो पत्नी आपकी सारी ज़रूरतें पूरी करती है उसकी तारीफ़ कीजिए न। ऐश्वर्या राय अभिषेक बच्चन के लिए सबकुछ करती है। इसलिए ऐश्वर्या की तारीफ़ अभिषेक को करने दीज़िए। सभी पतियों से मेरी अपील है कि अपनी पत्नी को एक बार कहकर तो देखिए। कि ऐश्वर्या, प्रियंका, कैटरीना और करीना जाए जहन्नुम में। मेरे दिल की मल्लिका तो केवल आप हैं।मेरे दिल-दिमाग में तो केवल आप ही बसती हैं। आप मेरे लिए सबकुछ करती हैं। वो एक्ट्रेसेस या बाकी लड़कियां तो मुझे जानती तक नहीं। मेरे लिए चिंता नहीं करतीं। मैं न खाऊं तो खुद भूखी नहीं रहतीं। भूखी तो आप रहती हैं, तो मेरे लिए सबसे खूबसूरत और सेक्सी आप ही हैं आपके हर रूप में। फिर देखिए आपके रिश्ते में कैसी ताज़गी आती है। दरअसल औरत की महत्वाकांक्षा मर्द ही बढ़ा देता है। जब वो दूसरे की तारीफ़ करता है। तो औरत पूरे जी-जान से वैसा ही बनने की कोशिश करने लगती हैं। और उसकी नैसर्गिक खूबसूरती वैसे ही खो जाती है। इसलिए पत्नी को प्यार करें। उनके अंदर हीन भावना न आने दें। सभी पत्नियों की तरफ़ से उनके-उनके पतियों को समर्पित।

हैप्पी वेलेंटाइन्स डे (व्यंग)

वैलेंटाइन डे। यानि प्यार करनेवालों का दिन.. लेकिन कुछ लोग इस दिन देश की संस्कृति के रखवाले बने घूमते नज़र आते हैं। टीवी पर चैट शो आयोजित होते हैं। पश्चिमी सभ्यता और बाज़ारवाद की दुहाई देकर अपनी सभ्यता को बचाने के लिए केवल भाषणबाज़ी होती है। कुछ तत्व लाठी-डंडे लेकर युवक-युवतियों को मारने निकलते हैं।लेकिन मेरा मानना है कि पश्चिमी सभ्यता का दिन कहने वाले लोग शायद ये नहीं जानते कि भारत में तो आदिकाल से ही ये सब हो रहा है। और हमलोग इस तरह का दिन मनाने में माहिर हैं। आप कहेंगे कि प्रेम का भी कोई एक दिन हो सकता है। तो आप बताइए कि हमारे देश में भी तो अलग-अलग रिश्तों के लिए अलग-अलग दिन फ़िक्स हैं।ये राखी क्या है? क्या भाई-बहन का प्यार दर्शाने के लिए एक ही दिन काफ़ी है। अगर राखी न मनाई जाए। तो भाई-बहन के आपसी प्यार का पता नहीं चलेगा।. और ये तीज, करवाचौथ और वट सावित्री क्या है भाई? पति के लिए दिन फ़िक्स! क्यूं भइया आप तो कहते हैं कि प्यार के पर्व का एक दिन नहीं होना चाहिए। कर्तव्य तो सालों भर के लिए होते है। फिर दिखावा क्यूं। तो फिर तीज, करवाचौथ। जैसे पर्वों को करके दिखावा क्यूं। पति के लिए क्या एक ही दिन फ़िक्स होना चाहिए।उसी तरह विदेशों में मनाए जाने वाले अन्य डे पर भी लोग खूब भाषणबाजी करते हैं। तो ये जिउतिया क्या है। बच्चों के लिए दिन फ़िक्स? क्या ये पर्व करके ही आप प्यार या कर्तव्य प्रदर्शित कर सकते हैं। वैसे नहीं? तो जब विदेशों की सभ्यता संस्कृति से इतनी चिढ़ है तो अपने यहां ये सारे पाखंड और चोचले क्यों। जहां तक रही बाज़ारवाद की बात तो राखी के लिए भी मार्केट में राखियों और गिफ्ट्स की जमकर ख़रीदारी होती है। तीज-करवाचौथ की तो बात ही मत करें। उस दिन के लिए तो महिलाएं साड़ी-कपड़ा और न जाने क्या-क्या ख़रीदती हैं। तो उस वक्त बवेला क्यूं नहीं मचाया जाता। मार्केटिंग स्ट्रैटजी तो उस समय भी काम करती है। अगर हमारे यहां अपनी भावनाओं को प्रदर्शित करने के लिए राखी, तीज, करवाचौथ, जिउतिया और अन्य

त्योहार बनाए गए हैं। जब लोग दैनिक कार्यों को भूलकर एन्जॉय करते हैं। तो विदेशों में भी ऐसे ही दिन अपनी फ़ीलिंग्स को दर्शाने के लिए बनाए गए हैं। ताकि व्यस्ततम दिनचर्या में से वे भी कोई दिन अपने प्यार, माता-पिता, दोस्त को समर्पित कर सकें। तो इसमें बुराई क्या है। अगर उनके यहां कुछ अच्छा है तो हमें अपनाना चाहिए और हमारे यहां कुछ अच्छा है तो उन्हें। यही तो है ग्लोबलाइजेशन।. लेकिन दरअसल कुछ लोग जिनके पास कोई काम-धाम नहीं है। उन्हें फालतू का हल्ला करने की बीमारी होती है।और ये होली। जो ऐसा लगता है कि मर्यादाओं को तोड़ने के लिए ही इस पर्व की आड़ ली जाती है। भाभी जो मां समान होनी चाहिए। लोग हर तरह के मज़ाक करते हैं। साली। छोटी बहन होनी चाहिए। उसमें भी सीमाओं का ध्यान नहीं रखते। और भगवान कृष्ण और राधा की नगरी में तो प्रेम का प्रतीक मानकर ही ये पर्व मनाया जाता है। और हमारे देश में तो आदिकाल से ही यहां तक कि सभी देवी-देवता भी प्यार का संदेश देते रहे हैं। और इस मामले में हमारी सभ्यता संस्कृति काफ़ी फॉरवर्ड रही है। तो अगर हम कुछ करें तो बहुत अच्छा। दूसरा वही काम करे तो ख़राब। वैसे भी हमारे देश के अधिकतर लोगों की मानसिकता यही है। इसलिए वैलेंटाइन डे भी जो मनाना चाहते हैं। उन्हें मनाने दें। फालतू का विरोध कर उन्हें परेशान न करें। आपको नहीं मनाना तो न मनाएं। आप पर भी पाबंदी नहीं। हां जहां कुछ आपत्तिजनक होते देखें तो विरोध दर्ज कराएं। लेकिन ऐसे ही केवल घूमने-फिरने या साथ वक्त बिताने वालों को बेवजह परेशान न करें। या विरोध भी न करें। कानून और सामाजिक मर्यादाओं का ध्यान रखते हुए सबको अपनी ज़िंदगी खुलकर जीने की आज़ादी है। और सभी समझदार हैं। अगर वे इसी माध्यम से ख़ुश होना चाहते हैं। तो उन्हें ख़ुश होने दें। इसलिए सभी प्यार करने वालों को, पति-पत्नी को, दोस्तों को, परिवारों को और पूरे देश को मेरी तरफ़ से हैप्पी वेलेंटाइन्स डे।

बेटी के नाम मां का पत्र

मम्मा ने देखे हैं तुम्हारे लिए ढेरों सपने, मेरे सपनों का मान रखना, अपने अधिकारों के प्रति हमेशा जागरुक रहना, लेकिन कर्तव्य निभाने में कभी पीछे मत हटना। लेकिन मम्मा चाहती है कि तुम्हारा नाम फॉलोवर्स में नहीं हो। बल्कि लोग तुम्हें फॉलो करें। तुम शासित नहीं, शासक बनो। नियम बनाने वालों में से हो। नियम को लकीर के फकीर की तरह मानने वालों में से नहीं.. हर उस चीज को वैसे ही मत मानना.. जिसके लिए तुम्हारा मन न माने। सपने हमेशा ऊंचे रखना और उन्हें पूरा करने का माद्दा भी रखना। जीवन में संभावनाएं अनंत हैं। जीवन के आकाश को नापने के लिए अपने पूरे पंख फैलाकर उस अनंत आकाश में उड़ना। कंजर्वेटिव मत होना.. सोच अपनी व्यापक रखना। हमेशा सेल्फ इंडिपेंडेंट रहना। हमेशा कंस्ट्रक्टिव वे में आगे बढ़ना और अपने सपने पूरे करना। कभी गलत रास्तों पर चलकर सपनों का पूरा मत करना.. हमेशा लंबा रास्ता अपनाना.. शॉर्टकट नहीं.. क्योंकि शॉर्टकट तरीके से पाई गई खुशियों का वक्त भी बहुत शॉर्ट होता है। मेरी किसी भी गलत बात को केवल इसलिए मत मान लेना। कि मैं तुम्हारी मां हूं। क्योंकि किसी गलत बात के विरोध का ये मतलब नहीं कि तुम सामने वाले की बेइज्जती कर रही हो। और वैसे भी तुम मेरे सबसे करीब हो.. तुम मुझे मेरी गलतियों पर नहीं टोकोगी, तो कौन टोकेगा।. कोई अगर तुम्हें नुकसान पहुंचाने की कोशिश करे, डराए या धमकाए.. तो उस वक्त तो उसकी बात मान लेना .. सिर्फ इसलिए कि तुम उसके पास से बचकर निकल सको.. उसे अपनी तरफ से निश्चिंत कर देना। लेकिन जैसे ही उसके पास से निकल पाओ.. वैसे ही उस पर ऐसा एक्शन लेना.. कि दोबारा वो तुम्हारे नुकसान के बारे में न सोच सके। अपनी मां से कभी कोई बात मत छुपाना.. चाहे वो कैसी ही बात क्यूं न हो। अगर मैं न रहूं.. तो पापा से । क्योंकि हमारे अलावा कोई तुम्हें होने वाले नुकसान से नहीं बचा सकता.. क्योंकि हमसे ज्यादा प्यार तुम्हें कभी कोई नहीं करेगा। माता-पिता का संतान से रिश्ता हर स्वार्थ

से परे होता है। विपरीत परिस्थियों से निकलने की हमेशा कोशिश करना। जो तुम्हारी रेस्पेक्ट न करे, हमेशा इस्तेमाल करने की चाहत रखे। जिसके साथ होने से तुम्हारी आंखों में बार-बार आंसू आए। ऐसे व्यक्ति को कभी स्वीकार मत करना। उसी इंसान को अपने करीब आने देना, जो तुम्हारा सम्मान करे। जिसके होने से तुम्हें सुरक्षा का एहसास हो, तुम्हारा कॉन्फिडेंस बूस्टअप हो, जो तुम्हें केवल मुस्कुराहट दे। जो तुम्हारे अस्तित्व पर हावी न होना चाहे, तुम्हारी मौलिकता नष्ट न करे, तुम जैसी हो। तुम्हें उसी रूप में स्वीकार करे और प्यार भी करे। और सबसे महत्वपूर्ण तुम्हारी रेस्पेक्ट करे, तुम्हारी केयर करे। तुम्हारे माता-पिता की परवरिश पर ऊंगली उठाने वाले, तुम्हारे चरित्र पर ऊंगली उठाने वाले, तुम्हारे सामर्थ्य पर ऊंगली उठाने वाले को अपने पास फटकने मत देना.. लेकिन अपने सकारात्मक कार्यों से उन्हें मुंहतोड़ जवाब जरूर देना।कभी ये मत सोचना कि मैं इस चीज के बिना नहीं रह सकती, इस व्यक्ति के बिना नहीं रह सकती। उस व्यक्ति के बिना जीवन कैसे जिऊंगी.. नहीं, एक इंसान किसी भी चीज के बिना रह सकता है। कोई चीज उसकी मजबूरी नहीं हो सकती। जब माता-पिता इस दुनिया में नहीं होते, तो इंसान सर्वाइव कर जाता है और अगर उनके बिना रह सकता है, तो किसी के बिना भी रह सकता है। किसी भी व्यक्ति या वस्तु को अपनी कमजोरी मत बनने देना। रिश्तों से.. दुखों से शक्ति लेना। प्यार को अपनी ताकत बनाना.. कभी किसी रिश्ते में धोखा मिले, तो दोगुने उत्साह से जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्ररित होना। हमेशा खुश रहने और खुशी देने की कोशिश करना। जीवन में अगर ऐसा मोड़ आए कि लगे मेरी जिंदगी बेमानी है, तो उनके लिए जीने की कोशिश करना जो लाचार हैं, असहाय हैं.. ऐसे लोगों की ताकत बनना। किसी सक्षम के लिए या उसके लिए आंसू बहाने से अच्छा है कि उसकी ताकत बनो, जिसे वाकई तुम्हारी जरूरत है। और हां, बेटा एक बात हमेशा याद रखना कि सिर्फ एक चीज है जिसके बिना किसी भी इंसान का जीना नहीं जीने के बराबर है। और वो है सेल्फ रेस्पेक्ट.. आत्म सम्मान। इसे कभी मत खोना।जिंदगी बहुत खूबसूरत है, इसे नष्ट करने का कभी मत सोचना। संघर्ष के बिना जिंदगी अधूरी है, इसलिए घबराना नहीं.. संघर्ष करना, हार मत मानना। ऐसा करना

कि मिसाल बन सको। कभी किसी बात के लिए दूसरों को दोष मत देना। और न खुद को।. क्योंकि तुम्हारे साथ वही होगा.. अच्छा या बुरा कुछ भी.. जो तुम खुद के लिए होने देना चाहोगी। हमेशा खुश रहना। सुखी रहना.. तुम्हारी आंखों में कभी आंसू न आए। यही मेरी दुआ है। जीवन में खूब सफल हो। और अंत में अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन की एक लाइन-

"छेनी और हथौड़ी की चोट खाकर पाषाण भी देवता बन जाते हैं, इसी तरह परिस्थियों की चोट खाकर मनुष्य भी महान बनता है.. बस शर्त यही है कि कड़ी से कड़ी चोट लगे, और वो टूटे नहीं"

सिद्धि, जिस दिन तुम्हारी मां इस दुनिया में जिंदा नहीं रहेगी, उस दिन भी मेरे ये शब्द जिंदा रहेंगे। ये उस वक्त तुम्हारा मार्गदर्शन करेंगे, जब तुम बड़ी होगी और किसी दुविधा या मुश्किल में होगी।
- तुम्हारी मम्मा

पति-पत्नी- मायने क्या?

जब एक बच्चा जन्म लेता है, तो उसकी पहचान होती है उसके जन्मदाता से.. उसके माता-पिता से। उसके बाद उसके माता-पिता द्वारा जन्म लेने वाले अन्य बच्चों.. यानि कि उसके भाई-बहनों से। फिर आस-पड़ोस, मित्र, अन्य रिश्तेदार.. समाज में रहनेवाले दूसरे लोगों से। लेकिन जैसे-जैसे वो बड़ा होने लगता है.. उसे एक ऐसे स्थायी साथी की जरूरत पड़ती है, जो उसके हर सुख-दुःख में काम आ सके। उसकी भावनाओं को बांट सके.. ऐसे में जन्म लिया एक और खूबसूरत रिश्ते ने.. यानि की पति-पत्नी के रिश्ते ने। एक-दूसरे के सुख-दुःख के साथी। लेकिन यौन संबंध, जो इस रिश्ते का एक खूबसूरत पार्ट है.. अभिन्न अंग है.. उसे लोगों ने वैवाहिक जीवन का हिस्सा न मानकर विवाह का आधार ही मान लिया.. जिसने इस रिश्ते की गरिमा को चोट पहुंचाई। अगर आपको ध्यान हो, तो हर सीरियल-फिल्म में शादी के बाद सुहागरात का एक दृश्य होता है, घर में भी विवाह के बाद रिसेप्शन के दिन सुहाग की सेज सजाई जाती है। मतलब कि ये तय मान लिया जाता है कि शादी के बाद सबसे पहली जरूरत शरीर की ही होती है.. यहां तक कि खांटी अरेंज मैरेज में जब पति-पत्नी एक दूसरे को ठीक से जानते तक नहीं। लोग समझ लेते हैं। कि जानना-समझना जिंदगी भर होता रहेगा.. पहले सुहागरात तो मना ली जाए। अगर आधार ये होगा, तो वाजिब है कि दोनों एक-दूसरे के प्रति ज्यादा सहिष्णु नहीं होंगे.. और इसी को प्यार मानेंगे। यही होता भी है। कानून ने भी ये जता दिया कि पति और पत्नी चाहे एक-दूसरे के प्रति कितना भी समर्पित क्यों न हों.. लेकिन अगर उनके बीच यौनाचार नहीं है.. या दोनों में से कोई एक यौन संबंध बनाने में असक्षम हो जाता है, तो दूसरा साथी इस आधार पर तलाक ले सकता है। आखिर क्यों? मान लिया जाए कि कोई बाद में जाकर असक्षम हो भी जाता है, तो क्यों तलाक लो.. क्या इतने दिनों का प्यार, त्याग, समर्पण, कर्तव्यपरायणता.. यौन संबंधों के आगे कोई मायने नहीं रखतीं। किसी दुख के दौर में, शारीरिक अक्षमता में जब सबसे ज्यादा जरूरत होती है जीवनसाथी के, उसके भावनात्मक सहयोग

Thank You for previewing this eBook

You can read the full version of this eBook in different formats:

- HTML (Free /Available to everyone)
- PDF / TXT (Available to V.I.P. members. Free Standard members can access up to 5 PDF/TXT eBooks per month each month)
- Epub & Mobipocket (Exclusive to V.I.P. members)

To download this full book, simply select the format you desire below